5

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'सारंगी 2' शिक्षकों के शिक्षण में चुनौतियाँ और सुझाव

अशोक कुमार*
रमेश कुमार**

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। बच्चे अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों से स्वत: एक भाषा सीखते हैं, वहीं उनकी मातृभाषा या प्रथम भाषा कहलाती है। मातृभाषा को बच्चे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों द्वारा, सहज परिवेश में सीखते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पाँचवी कक्षा तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का माध्यम रखने की बात कही गई है। इसे कक्षा आठ या उससे आगे की कक्षाओं में भी पढ़ाया जा सकता है। भाषा के महत्व को देखते हुए इसे विभिन्न प्रासंगिक विषयों के साथ और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़कर भी सिखाया जाना चाहिए।

मातृभाषा का जीवन तथा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत महत्व है। इसी के माध्यम से हम बोलते, लिखते, विचार करते और शिक्षा ग्रहण करते हैं। यही हमारे स्वप्नों तथा अनुभूतियों की भाषा है। जन्म के बाद बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के साथ-साथ उनमें मातृभाषा का विकास भी होता है। प्रारंभिक वर्षों में संज्ञानात्मक विकास और भाषा विकास दोनों साथ-साथ होते हैं, परंतु शीघ्र ही भाषा बच्चों के आगे के बौद्धिक विकास का साधन बन जाती है। वह उनके चिंतन और बोधन का आधार भी बन जाती है। अत: बुनियादी स्तर पर भाषा शिक्षण को रुचिपूर्ण और सरल बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए। इससे बच्चे अपनी जिज्ञासा, कल्पनाशीलता एवं सृजनात्मकता को भाषा के रूप में अभिव्यक्त कर पाएँगे। प्रस्तुत आलेख में भाषा शिक्षण के रूप में सशक्त साधन सारंगी पाठ्यपुस्तक को स्वयं समझने एवं पुस्तक के अनुरूप कार्य करने के लिए अनेक संकेत भी दिए गए हैं। ये संकेत बच्चों के लिए उदाहरणस्वरूप हैं। वे इन संकेतों को आधार बनाकर खुद चिंतन करके नवीन चीजें बना सकते हैं। यह आलेख भाषा शिक्षण के साथ ही मौलिक अभिवृत्ति को जोड़ने का निरंतर साधन भी प्रस्तुत करता है।

**सहायक अध्यापक,* शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016
***सह-आचार्य,* प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

शिक्षा बच्चों के सार्वभौमिक विकास में सहायक होती है जैसा कि रोजगार और वैश्विक परिस्थितिकी में तीव्र गति से आ रहे परिवर्तनों के कारण यह जरूरी हो गया है कि बच्चों को जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो वे सीखेंगे ही साथ ही सतत सीखने की कला भी सीखेंगे। अत: इसलिए शिक्षा में विषयवस्तु को पढ़ाने की जगह तार्किक अवलोकन एवं सूक्ष्म चिंतन की जरूरत है, जिससे बच्चे समस्या समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, विविध विषयों के बीच अंतर्संबंधों को देखें और समझें, कुछ नया सोचें और नई जानकारियों को बदलती परिस्थितियों या नवीन क्षेत्रों में उपयोग में ला पाएँ। शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी केंद्रित हो; जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो, लचीली हो और समग्रता व समन्वित रूप से देखने-समझने में सक्षम बनाने वाली साथ ही रुचिपूर्ण हो (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4, पृ.सं 4)। बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 10+2 वाली स्कूली व्यवस्था के 3–18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या रूपरेखा और शिक्षण शास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 की एक नई व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 4, पृ.सं 4)। शिक्षा नीति 2020 ने यहाँ तक कहा है कि बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व हो जाता है। इसलिए बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आंरभिक 6 वर्षों को अति महत्वपूर्ण माना जाता है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुच्छेद 1.1, पृ.सं. 9)। इस प्रकार बच्चों की बुनियादी स्तर की शिक्षा के महत्व को समझा जा सकता है। बच्चों के सार्वभौमिक विकास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बच्चों की भाषा को अधिक महत्व दिया है और भाषा को एक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। भाषा ही एक ऐसा साधन है, जो बच्चों के मानसिक विकास की पहली सीढ़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (अनुच्छेद 4.12, पृ.सं. 20) में दर्शाया गया है कि अनुसंधान स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि बच्चे 2–8 वर्ष की आयु के बीच बहुत जल्दी भाषा सीखते हैं। बहुभाषिकता से इस उम्र के विद्यार्थियों को बहुत अधिक संज्ञानात्मक लाभ होता है इसलिए सभी भाषाओं को एक-एक मनोरंजक और संवादात्मक शैली में पढ़ाया जाए, जिसमें बहुत सारी संवादात्मक बातचीत हो। भाषा के बुनियादी स्तर के महत्व को समझने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुति पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा बुनियादी स्तर की भाषा शिक्षा को और मजबूत बनाने के लिए कक्षा 2 की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक सारंगी का निर्माण किया गया है जिसकी विषयवस्तु को निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है जिन्हें बुनियादी स्तर के शिक्षकों के लिए समझना काफी महत्वपूर्ण हो जाता है तथा जिन्हें समझकर शिक्षक अपने (कक्षा-कक्ष के) शिक्षण को सरल व रोचकपूर्ण ढंग से संचालित करने में सफल हो पाएँगे—

- पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।
- पुस्तक में बच्चों के लिए अलग-अलग संदर्भों में विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं; जैसे—

बातचीत करना, सुनकर कुछ करना, कहानी और कविताओं का आनंद लेना, खेल-खेल में नए शब्दों की पहचान करना, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियाँ आदि।

- इस पुस्तक में पाँच संदर्भ ऐसे हैं, जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— परिवार, रंग ही रंग, हरी-भरी धरती, मित्रता और आकाश।
- बच्चों के दृष्टिकोण से पाठ्यपुस्तक में पाठों को रोचक बनाने लिए कार्यों में विविधता लाने का भरपूर प्रयास किया गया है।

'सारंगी 2' पाठ्यपुस्तक को संपूर्ण रूप में पाँच इकाइयों में विभाजित किया गया है। ये इकाई निम्नवत हैं—

1. परिवार
2. रंग ही रंग
3. हरी-भरी धरती
4. मित्रता
5. आकाश

पाठ्यपुस्तक की पहली इकाई परिवार में पुस्तक की शुरुआत एक चित्र के साथ की गई है। चित्र में बहुत से लोग विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त हैं। शिक्षक बच्चों के साथ इस तस्वीर को साझा करते हुए उनकी राय लेंगे, जैसे— इस चित्र में लोग क्या देख रहे हैं? लोग क्या कर रहे हैं? यदि आपको चाय बनाने का मौका दिया जाए तो आप क्या-क्या करेंगे? आपके पास खेलने के साधन उपलब्ध नहीं है तो आप फिर कौन-सा खेल खेलेंगे? यदि आपको गाने या कहानी सुनाने का अवसर दिया जाए तो कौन-सा गीत गाना या कहानी सुनाना पसंद करेंगे। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक में

कल्पनाओं के विस्तार के लिए अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को अभिप्रेरित करें तथा उनसे लगातार बातें करें। इस बातचीत के विस्तार से बच्चों को भी नए शब्द सुनने एवं उनके प्रयोग के अवसर उपलब्ध हो पाएँगे। किसी भी भाषा को सीखने के लिए नए शब्दों का ज्ञान एवं उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करना बहुत जरूरी होता है। बच्चे चित्र में अपनी ओर से विभिन्न गतिविधियों को भी जोड़ सकते हैं। शिक्षक की मदद से नई गतिविधियों को बनाकर उनका चयन करके नए-नए वाक्य बनाना सीख सकते हैं।

'सारंगी 2' पाठ्यपुस्तक की दूसरी इकाई है—रंग ही रंग। इस इकाई के अंतर्गत सम्मिलित पाठों में विविध रंगों के बारे में यह चर्चा की गई है कि विविध रंग कैसे बनाए जाते हैं; किन-किन रंगों के मिलने पर कौन-सा रंग बनेगा, इस पर पाठ्यपुस्तक में विस्तार से चर्चा की गई है। प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं में कौन-कौन से रंग होते हैं, इस विषय को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। साथ इस बात का भी ध्यान रखा गया है कि शिक्षक विद्यार्थियों से उनके आस-पास मिलने वाली

चीजों के रंगों के बारे में भी चर्चा करें। शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक के माध्यम से विविध क्रियाओं से भी जोड़ सकते हैं, जिससे बच्चों को विभिन्न रंगों का ज्ञान मिल सके। इससे बच्चे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से करके सीखने की ओर अग्रसित होंगे। शिक्षक बच्चों को ऐसे पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ जिससे वे विविध प्रकार के रंगों के बारें में स्पष्ट समझ बना सकें।

पाठ्यपुस्तक की तीसरी इकाई 'हरी-भरी धरती' के अंतर्गत विविध पाठों को सम्मिलित किया गया है। ध्यान देने वाली बात यह है कि प्रत्येक इकाई की शुरुआत एक आकर्षक चित्र के साथ की गई है जो कि शीर्षक को चरितार्थ करता है। यहाँ प्रस्तुत चित्र में धरती पर मिलने वाली अनेक वस्तुओं का जीवन चित्रण किया गया है। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने आस-पास मिलने वाली चीजों का सजीव चित्रण शब्दों के माध्यम से करें। विद्यार्थी अपने आस-पास के परिवेश में मिलने वाली विभिन्न वस्तुओं का उनके रंगों के आधार पर वर्गीकरण भी कर सकते हैं।

'सारंगी' पाठ्यपुस्तक की चौथी इकाई मित्रता में बच्चों के मनपंसद खेलकूद शामिल हैं। बच्चे हमेशा खेलना पसंद करते हैं। उनसे शिक्षक चित्र में शामिल खेलों के बारे में चर्चा कर सकते हैं। बच्चों से एकल एवं सामूहिक खेलों की सूची बनाकर भी उनके बारे में चर्चा कर सकते हैं।

ग्रामीण खेलों के बारे में बातचीत की जा सकती है। खेल ज्ञान के संवर्धन के लिए विभिन्न खिलाड़ियों की सूची खेलों के अनुसार बनवाई जा सकती है। बच्चों को एक सामूहिक खेल एवं एकल खेल भी खेलने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

अंतत: पाँचवीं इकाई में आकाश से जुड़े हुए पाठ शामिल किए गए हैं। चार दिशाओं के साथ-साथ चंदा मामा को भी पर्याप्त जगह दी गई है। आप बच्चों को चंदा मामा से जुड़ी हुई कविताएँ या लोरी गाने के लिए कह सकते हैं। इस पुस्तक में बहुत-सी रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, जैसे— झटपट कहिए, आओ बूझें पहेली आदि।

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ में जोड़ने तथा संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए पुस्तक में तरह-तरह की गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी साथ ही वे अपने घर और आस-पड़ोस का महत्व भी समझेंगे।

- बच्चों के आस-पास के परिवेश से जोड़कर अध्यापकों को विशेष रूप से इस बात पर ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक बच्चे की संस्कृति को सम्मान दिया जाए।
- बच्चों की भाषाओं यानि बहुभाषिकता को ध्यान में रखकर उन्हें अपनी भाषा सीखनें के अवसर प्रदान किया जाए।
- बच्चों को तकनीक के माध्यम से सीखाने का भी प्रयत्न करना चाहिए।
- बच्चों के समग्र विकास के लिए दैनिक पाठ्यचर्या में गतिविधियाँ शामिल करनी चाहिए।
- बच्चों की आयु अनुकूल बाल-साहित्य का चुनाव कर पहले से ही तैयार रखना चाहिए, ताकि बच्चों को पढ़ने का अवसर मिलें और पुस्तकों में लगाव बढ़े।
- मूल्यों को विकसित करने हेतु, समय-समय पर कुछ नाट्य कविताओं का आयोजन पाठ पढ़ाते समय जरूर करना चाहिए।

हिंदी पाठ्यपुस्तक सारंगी 2 का कक्षा में शिक्षण कराने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं—

- बुनियादी स्तर के शिक्षकों को बच्चों की गतिविधियों का अप्रत्यक्ष रूप से अवलोकन सतत रूप से करते रहना चाहिए, जिससे शिक्षकों द्वारा सही अर्थों में बच्चों के साधारण अनुभवों को गतिविधियों के रूप में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शामिल करके इस प्रक्रिया को रोचकपूर्ण व रचनात्मक बनाया जा सके।
- शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के जीवन के दिन-प्रतिदिन के अनुभवों; जैसे— 'परिवार', 'हरी-भरी धरती', 'मित्रता और आकाश' आदि संदर्भों को विषयवस्तु के साथ एकीकृत करके हिंदी विषय को पढ़ाएँ।
- कक्षा-कक्ष में शिक्षकों को शिक्षण के दौरान बच्चों की कल्पनाशीलता, जो 'परिवार', 'मित्र', 'रंगों' और 'आकाश' के प्रति है, उसको बढ़ाने में सहायक होना चाहिए। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा दें न कि उसमें बाधक बनें। बच्चों की कल्पनाशीलता को उजागर करने के लिए उन्हें पूर्णरूप से स्वतंत्रता दें।
- शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों को कुछ चित्रों को दिखाए तथा उन पर विभिन्न आयामों पर बच्चों की प्रतिक्रिया लें, जिससें बच्चों में एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की भावना का विकास हो सके; तत्पश्चात परिवार के परिप्रेक्ष्य में उस विषय पर चर्चा करें, जिससे बच्चे परिवार के प्रति भी जिम्मेदार बन सकें।

बच्चों को खेल-खेल में बहुत-सी गतिविधियों द्वारा सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए तथा उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने का मौका देना चाहिए। हिंदी जैसे विषय का शिक्षण कराते हुए बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार के खेलों पर चर्चा

करें तथा शिक्षकों को भी समय-समय पर बच्चों के साथ खेलना चाहिए, जिससे बच्चों का मनोबल बढ़े और बच्चे रुचि लेकर पाठ पढ़ें। बुनियादी स्तर के शिक्षण में बच्चों को अनुभवात्मक आधारित विधि से अधिगम कराना चाहिए, इससे बच्चों में सहभागिता बढ़ेगी और यह विधि उनमें विषयवस्तु की समझ को दृढ़ बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी। अनुभवात्मक विधि से पढ़ाने से पहले शिक्षक को कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों, जैसे— मूर्त अनुभव, अपसारी चिंतन, चिंतनशील अवलोकन, अमूर्त चिंतन, आत्मसातीकरण, अभिसारी चिंतन, सक्रिय प्रयोग और अनुकूलन आदि मनोवैज्ञानिक तथ्यों की समझ का होना अनिवार्य है, जिससे शिक्षक बच्चों को पूर्णरूप से समझ सकें और उन्हें बेहतर तरीके से अधिगम करा सकें।

निष्कर्ष

इस प्रकार बुनियादी स्तर पर भाषा के सीखने-सिखाने का महत्व बढ़ जाता है। चूँकि बुनियादी स्तर पर बच्चे में भाषा को ग्रहण करने की क्षमता तीव्र होती है, इसलिए इस स्तर पर भाषा का शिक्षण के दौरान शिक्षण विधियों के साथ बच्चों की सक्रिया सहभागिता कराएँ, जिससे बच्चे रुचिपूर्ण तरीके से विषयवस्तु को समझ सकेंगे। रा.शै.अ.प्र.प. की पुस्तकों का निर्माण पूर्णरूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संस्तुतियों के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत लेख में पुस्तकों की विषयवस्तु की रूपरेखा, चुनौतियाँ और शिक्षकों के लिए विभिन्न सुझावों को दर्शाया गया है जो शिक्षकों व अन्य हितधारकों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होंगे। स्तर पर सम्मिलित पाँच इकाइयों का यदि पूर्व में भाव बोध हो तो न सिर्फ शिक्षक, बल्कि विद्यार्थी भी पूरी तैयारी के साथ प्रत्येक पाठ से जुड़ेंगे। इसमें न सिर्फ शिक्षक को बल्कि विद्यार्थियों को भी बड़ा आनंद आएगा। इस प्रकार वे अलग-अलग तरह की विभिन्न गतिविधियों से आसानी से जुड़ पाएँगे।

संदर्भ

कुमार, अशोक. 2023. अनुभवाधारित भाषा-अधिगम. *'आओ अनुभव से सीखें' हैंडबुक (प्रीप्रेटरी स्टेज के शिक्षकों के लिए)*. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *सारंगी (कक्षा 2)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.